इकाई 1 निर्वचन की भारतीय परम्परा एवं यास्क का निर्वचन सिद्धान्त

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 यास्क विरचित निरुक्त

1.2.1 निर्वचन की भारतीय परम्परा

1.2.2 यास्क का निर्वचन सिद्धान्त

1.2.3 निर्वचन पद्धति का महत्त्व

1.3 सारांश

1.4 शब्दावली

1.5 अभ्यास प्रश्नों की उत्तरमाला

1.6 सन्दर्भ-ग्रन्थ

1.7 बोध-प्रश्न

1.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन कर लेने के बाद आप :

- यास्क के निर्वचन शैली का सामान्य परिचय दे सकेंगे।
- निर्वचन की भारतीय परम्परा के विषय में आप विश्लेषण कर सकेंगे।
- यास्क के निर्वचन सिद्धान्त का विवेचन कर सकेंगे।
- निर्वचन सिद्धान्त के महत्त्व पर टिप्पणी लिख सकेंगे।
- विषयवस्तु के अनुसार शब्दों के निर्वचन करने में समर्थ हो सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

वेद सम्पूर्ण शास्त्रों में सबसे प्राचीन साहित्य है। आर्य जाति में वेद अत्यन्त गौरवपूर्ण ग्रन्थ रूप में प्रतिष्ठित है। इसी लिए महाभाष्यकार पतञ्जलि ने ब्राह्मणों को अकारण वेद के अध्ययन का निर्देश दिया है - 'ब्राह्मणेन निष्कारणं षडंगों वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च।' याज्ञवल्क्य स्मृति में भी वेद के महत्त्व को इस श्लोक के द्वारा प्रतिपादित किया गया है-

पुराण-न्याय-मीमांसा-धर्मशास्त्रांगमिश्रिता:।
वेदा: स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश।।

इसका अर्थ है कि- पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष और ऋग्, यजुः, साम और अथर्व ये चार वेद- ये चौदह विद्या, धर्म के स्थान हैं। इनमें चार वेद ही मुख्य हैं, क्योंकि पुराण, न्याय, आदि वेदार्थ का स्पष्टीकरण करने में ही सहायक माने जाते हैं।

वेदों का ठीक-ठीक उच्चारण और उनका सही अर्थ समझने के लिए वेदाङ्गों का प्रणयन किया गया है। वेद के छः अङ्ग हैं- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। इनमें निरुक्त को वेदपुरुष का श्रोत्ररूप (कानरूप) अङ्ग माना जाता है, क्योंकि निरुक्त के अध्ययन के बिना मनुष्य वेद के सम्बन्ध में कानों के होते हुए भी सुनने योग्य नहीं है। जैसा कि सुनने में असमर्थ के सामने स्वर, ताल आदि के साथ किसी गीत का गान जंगल में रोने के समान होता है उसी प्रकार जिस पुरुष ने निरुक्त नहीं पढ़ा उस पुरुष के आगे किसी मन्त्र का पाठ भी एक तरह से जंगल में रोने के समान ही होगा, वह उसको ठीक तरह से नहीं समझ सकेगा तथा निरुक्त के स्वाध्याय के बिना स्वयं भी वह वेद के अर्थ को नहीं समझ सकता है।

वेद मन्त्रों की व्याख्या आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक, याज्ञिक दृष्टि से निर्वचन-पद्धति से की गयी है। सम्पूर्ण वेद देवतावाद पर आधारित है। वे देवता कितने हैं? उनका क्या स्वरूप है? वे चेतन हैं या अचेतन हैं? उनका क्या कर्तव्य है? इत्यादि विषयों की विस्तृत चर्चा निरुक्त में हुयी है। वेद के अर्थ को समझने के लिए, निर्वचन-पद्धति युक्त इस निरुक्त शास्त्र को जानना अत्यन्त आवश्यक है। आप सभी इस इकाई के अन्तर्गत यास्क विरचित निरुक्त के निर्वचन-पद्धति से सम्बन्धित विभिन्न विषयों का अध्ययन करेंगे।

1.2 यास्क विरचित निरुक्त

यास्क विरचित निरुक्त, 'निघण्टु' ग्रन्थ की व्याख्या है। निघण्टु में वेद के कठिन शब्दों को एकत्र किया गया है। यह निघण्टु ग्रन्थ पाँच अध्यायों और तीन काण्डों में विभक्त है। प्रथम तीन अध्याय 'नैघण्टुक काण्ड' कहलाते हैं। चौथा, पाँचवाँ अध्याय 'दैवतकाण्ड' है। निघण्टु पर वर्तमान में एक ही व्याख्या उपलब्ध होती है इसके कर्ता का नाम देवराज यज्वा है।

निघण्टु के बाद निरुक्तों का समय आता है। दुर्गाचार्य के अनुसार निरुक्त संख्या में 14 थे। यास्क द्वारा लिखित निरुक्त में 12 निरुक्तकारों के नाम और उनके मतों का निर्देश दिया गया है। इनके नाम अक्षरक्रम से इस प्रकार हैं- (1) अग्रायण (2) औपमन्यव (3) औदुम्बरायण (4) और्णनाभ (5) कात्थक्य (6) क्रौष्टुकि (7) गार्ग्य (8) गालव (9) तैटीकि (10) वार्ष्यायणि (11) शाकपूणि (12) स्थौलाष्टीवि। तेरहवें निरुक्तकार स्वयं यास्क हैं। इनका निरुक्त छः वेदाङ्गों में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। निरुक्त में बारह अध्याय हैं, अन्त में दो अध्याय परिशिष्ट रूप में दिये गए हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण ग्रन्थ चौदह अध्यायों में विभक्त हैं।

1.2.1 निर्वचन की भारतीय परम्परा

निर्वचन शास्त्र भाषा विज्ञान की एक शाखा है और निरूक्त वेदांङग का अंग है। यह वह विज्ञान है, जो शब्दो के उद्भव तथा इतिहास की खोज करता है।

संस्कृत वाङ्मय के इतिहास में वेद सबसे प्राचीन ग्रन्थ स्वीकार किए गये हैं। अतः भारत में निर्वचन की परम्परा का आरम्भ वैदिक संहिता उसमें भी व्याकरण और भाषा के सम्बन्ध में पर्याप्त संकेत मिलता है । साहिंताओं में अनेक स्थलों पर शब्दों के निर्वचन उपलब्ध होते हैं। उदाहरणार्थ संहिताओं में निम्नलिखित निर्वचन दर्शाये हैं- 'गायन्ति त्वा गासत्रिणः (क.1.10.1);

''यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः (क.10.90.16) केत पूः केतं नः पुनातु (यजु.11.7, साऽप्रथत साप्रथिव्यभवत तत्प्र थिव्यै प्रथिकीत्वम्'' (तै.सं.7.5.1), तीर्थैस्तरन्ति (अधर्व.18.4.7) इन निर्वनों में क्रमशः यज्ञ, गायत्री, केतपू, प्रथिवी, तीर्थ शब्दों का निर्वचन संकेतित है।

निर्वचनों की यह परम्परा इसके बाद ब्राह्मण- ग्रन्थों,आरण्कों तथा उपनिषदों में भी दिखाई पड़ती है। उदाहरण के लिए कतिपय निर्वचन देखे जा सकते हैं, विश्वस्थ हवे मित्रं विश्वा मित्रः (ऐत.ब्रा.29.5) तज्जाया जाया भवति यदस्यां जायते पुनः (ऐत.ब्रा.3.31), य एभ्यो यत्रं प्रारोचायत्तस्मात्पुरोडाशः पुररेदाश हवै नामै तद्यत्पुरोडाश इति (शत.ब्रा.1.51.5.), अशीर्यत इठि शरीरम् (ऐतरेयारण्यक, 2.1.4) इयं वै पूषयंहीदं सर्वं पुष्यति यदिदं किञ्च'' (बृहदा.उप.1.4.13) , एतम् एवाङिगरस मन्यतेऽगानां यद्रसः (छान्दो.उप. 1.2.10) आदि में क्रमशः विश्वामित्र, जौया, पुरोडाश, शरीर, पूषा, आङिगरस (प्राण) शब्द के निर्वचन दिये गये हैं।

निर्वचनों की यह परम्परा अध्याय यास्क तथा सतत चलती रही है इसी लिए निरुक्तकार स्थान-स्थान पर ब्राह्मणगत निर्वचनों को उद्धृत करते हैं, जैसे, 'यद् अवृणोत् तद् वृत्रस्य वृत्रत्वमिति विज्ञायते', 'यदवर्धत तद् वृत्रस्य वृत्रत्वमिति विज्ञायते।' 'तद् यदाभिर्वृत्रमशकद् हन्तुं तच्छक्वरीणां शक्वरीत्वमिति विज्ञायते' इत्यादि। ब्राह्मण-काल के बाद निर्वचन विज्ञान पर ग्रन्थ लिखे जाने लगे। यास्क ने अपने निरुक्त में अनेक नैरुक्तों की चर्चा की है, जो लगभग 12 हैं। यास्क सबसे अन्तिम निर्वचनशास्त्रप्रणेता थे। अतः यास्क से पहले निर्वचन-परम्परा अत्यन्त विकसित हो चुकी थी।

ऋग्वेद के भाष्य में निघण्टु-भाष्य के वचनों का निर्देश किया है जो देवराज यज्वा के भाष्य में थोड़े पाठान्तर से उपलब्ध होते हैं । यह बात आप सभी समझ चुके हैं कि निर्वचन की परम्परा ऋग्वेद से ही प्रारम्भ हो चुकी थी। देवराज ने अपने भाष्य के उपोद्धात में क्षीरस्वामी तथा अनन्ताचार्य की 'निघण्टु व्याख्याओं का उल्लेख किया है। क्षीरस्वामी 'अमरकोश' के प्रसिद्ध टीकाकार हैं। 'निघण्टु व्याख्या' से देवराज का अभिप्राय इसी अमरकोश की व्याख्या से प्रतीत होता है। इस भाष्य का नाम 'निघण्टु निर्वचन' है। अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार देवराज ने नैघण्टुक काण्ड का ही निर्वचन अधिक विस्तार के साथ किया है। इस प्रकार यह ज्ञात होता है कि निर्वचन की भारतीय परम्परा वैदिक संहिताओं से प्रारम्भ होकर ब्राह्ममण-ग्रन्थ, ओर वयक, उपनिषद आदि से होती हुई आचार्य यास्क

के पूर्ववर्ती नैसभ्त्रों तथा यास्क तक निरन्तर चलती रही। परन्तु आज आचार्य यास्क के निरूक्त के अतिरिक्त पूर्ववर्ती किसी भी आचार्य का ग्रन्थ प्राप्त नहीं होता जिनमें इन निर्वचनों के विषय में कुछ ज्ञात हो सके। मन्त्र यास्क ही ऐसे आचार्य हैं जिनके ग्रन्थ में निर्वचन के सिद्धान्तों का विवेचन हुआ है। अतः इस विद्या के लिए यही एक मात्र प्रमाणभूत ग्रन्थ है।

इस प्रकार यहाँ आप सभी ने 'निर्वचन की भारतीय परम्परा' इस विषयवस्तु का भली-भाँति अध्ययन कर लिया है। आइए अब हम अधोलिखित अभ्यास प्रश्नों के माध्यम से अपने पढ़े हुए विषय को जाँचने का प्रयास करते हैं।

अभ्यास प्रश्न-2

1) निर्वचन की भारतीय परम्परा में सर्वप्रथम ग्रन्थ कौन सा है?

   (क) शिक्षा (ख) व्याकरण (ग) ऋग्वेद (घ) निरुक्त

2) किस काल में निर्वचन परम्परा पर्याप्त विकसित हो चुकी थी?

   (क) आरण्यक-काल (ख) ब्राह्मण-काल

   (ग) पौराणिक-काल (घ) व्याकरण-काल

3) निरुक्तकार ने स्थान-स्थान पर किन निर्वचनों को उद्धृत किया है?

   (क) आरण्यकगत (ख) ब्राह्मणगत

   (ग) सूत्रगत (घ) अर्थगत

4) ऋचाओं में किस प्रकार के निर्वचन दिए गए हैं?

   (क) मन्त्ररूप (ख) शब्द-अर्थरूप

   (ग) भाष्यरूप (घ) पद्यरूप

5) सबसे अन्तिम निर्वचनशास्त्र के प्रणेता कौन थे?

   (क) यास्क (ख) शाकल

   (ग) गालव (घ) गार्ग्य

6) 'यास्क से पहले निर्वचनशास्त्र की परम्परा अत्यन्त विकसित हो चुकी थी' - यह कथन है?

   (क) सत्य (ख) असत्य

7) 'ऋग्वेद के भाष्य में निघण्टु-भाष्य के वचनों का निर्देश किया है'- यह कथन है?

   (क) सत्य (ख) असत्य

8) 'यास्क ने अपने निरुक्त में अनेक नैरुक्तों की चर्चा की है'- यह कथन है?

   (क) सत्य (ख) असत्य

9) 'अमरकोश की व्याख्या ही निर्वचन है'- यह कथन है?

(क) सत्य (ख) असत्य

10) 'ब्राह्मण-काल के बाद निर्वचन विज्ञान पर ग्रन्थ लिखे जाने लगे'- यह कथन है?

(क) सत्य (ख) असत्य

11) 'अपनी प्रतिज्ञा अनुसार देवराज ने.....का निर्वचन विस्तार के साथ किया।

(क) नैगम काण्ड (ख) नैघण्टुक काण्ड

(ग) दैवत काण्ड (घ) व्याकरण

12) 'निघण्टु व्याख्या' से अभिप्राय देवराज का .....की व्याख्या से है।

(क) व्याकरण (ख) सूत्र

(ग) अमरकोश (घ) वाचस्पत्यम्

13) क्षीरस्वामी ..... के प्रसिद्ध टीकाकार हैं।

(क) सूत्र (ख) वाचस्पत्यम्

(ग) अमरकोश (घ) व्याकरण

14) देवराज ने अपने भाष्य के उपोद्घात में .....की निघण्टु व्याख्याओं का उल्लेख किया है।

(क) शाकल-बाष्कल (ख) गार्ग्य-गालव

(ग) औपमन्यव क्रौष्टुकि (घ) क्षीरस्वामी-अनन्ताचार्य

15) 'निघण्टु व्याख्या' का नाम .....है।

(क) निरुक्त (ख) भाष्य

(ग) सूत्र व्याख्या (घ) निघण्टु निर्वचन

1.2.2 यास्क का निर्वचन सिद्धान्त

यास्क ने निरुक्त के द्वितीय अध्याय के आरम्भ में निर्वचन के कुछ सिद्धान्त प्रस्तुत किये हैं। प्रायः निरुक्तकारों का यह सिद्धान्त है कि शब्दों की प्रथम प्रवृत्ति किसी न किसी क्रिया के आधार पर ही होती है, अतः आचार्य यास्क ने निर्वचन के सिद्धान्तों के प्रसंग में निर्वच करते समय अर्थ पर दृष्टि रखना आवश्यक माना है- अर्थनित्यः परीक्षेत्र (नि. 2.1) जिससे यह स्पष्ट है कि निर्वचनशास्त्र में शब्दों के उद्भव प्रथा इतिहास का अध्ययन अर्थ की खोज तथा व्याख्या के उद्देश्य से किया जाता है।

इसका तात्पर्य है कि निरुक्तकार शब्द के अर्थ को प्रधान रूप से ध्यान में रखते हुए उसके अनुसार धातु की कल्पना करके ही शब्द का निर्वचन करते हैं। इसी आधार पर निरुक्त में यह सिद्धान्त माना गया है- कि 'सर्वाणि नामानि आख्यातजानि' अर्थात् सारे नाम आख्यात (क्रिया) से उत्पन्न हुए हैं। उदाहरण के लिए 'होतृ' शब्द को लेते हैं। 'होता' ऋग्वेद का ऋत्विज् होता है, यह उसका नाम है। यह मन्त्रों से देवताओं की स्तुति या उनको बुलाता है। निरुक्त 'होतृ' शब्द का निर्वचन 'हु' धातु से नहीं करते, क्योंकि 'हु'

धातु का अर्थ 'दान' और अदन होता है, होता नहीं। तब वे हु धातु से 'तृन्' या 'तृच्' प्रत्यय की कल्पना करके 'होतृ' शब्द बनाते हैं। निरुक्त का यह सिद्धान्त है कि- 'अर्थनित्यः परीक्षेत, न संस्कारमाद्रियेत'। इसका अर्थ है कि-शब्द के अर्थ को दृष्टि में रखकर ही शब्द में प्रकृति और प्रत्यय की कल्पना करें, व्याकरण द्वारा कहे गये संस्कार की परवाह न करें।

आचार्य यास्क ने निरुक्त के द्वितीय-अध्याय में निर्वचन के सिद्धान्त इस प्रकार बतलाये हैं-

1) स्वर संस्कार युक्त, व्याकरण प्रक्रिया के अनुसार निर्वचन-

तद्येषु पदेषु स्वर- संस्कारौ समर्थौ प्रादेशिकेन गुणेनान्वितौ स्यातां तथा तानि निर्ब्रूयात्। (नि. 2.1) अर्थात्

जिन पदों में स्वर (उदात्त, अनुदात्त, स्वरित), संस्कार (धातु, प्रत्यय, लोप, आगम आदि परिवर्तन) अर्थ के अनुकूल हों अथवा व्याकरण प्रक्रिया से जो युक्त हों उनका उसी प्रकार निर्वचन कर लेना चाहिए।

2) अर्थ को मुख्य मानकर निर्वचन -

अथानन्वितेऽर्थेऽप्रादेशिके विकारेऽर्थनित्यः परीक्षेत केनचिद् वृत्ति मान्येन। अर्थात् जब स्वर तथा व्याकरण की प्रक्रिया शब्द के अर्थ के अनुकूल न हो, उचित धातु का विकार भी न हो तब उसके अर्थ को आधार मानकर शब्द के अवयवों के अर्थ तथा समूचित अर्थ का न छोड़ते हुए उसकी (कृत, तद्धित, धतु, समास) आदि किसी वृत्ति की समानता को देखकर निवेचन कर लिखना चाहिए।

3) अक्षर या वर्ण की समानता को लेकर निर्वचन-

अविद्यमाने सामान्येऽप्यक्षर-वर्ण-सामान्यन्निर्ब्रूयात्।

अर्थात् जहाँ शब्द तथा सम्भावित किसी वृत्ति के अर्थ में कोई भी समानता न हो तो भी वहाँ अक्षर या वर्ण-स्वर-व्यंजन की समानता को लेकर मिलते-जुलते अर्थ वाले उस अक्षर वर्ण से युक्त दूसरे शब्द को समानता के आधार पर निर्वचन करना चाहिए।

4) निर्वचन अवश्य करें

न त्वेव न निर्ब्रूयात्। न संस्कारमाद्रियेत। अर्थात् निर्वचन तो अवश्य करना चाहिए, ऐसा न हो कि निर्वचन न करें। इसके लिए व्याकरण प्रक्रिया (संस्कार) का आदर नहीं करना चाहिए, क्योंकि शब्द के साधुत्व को प्रतिपादित करने वाली सभी वृत्तियाँ (कृत समासादि) संशयग्रस्त होती हैं। अतः व्याकरण की प्रक्रिया को महत्व देना व्यर्थ होता है।

5) उचित रूप में विभक्ति परिवर्तन पूर्वक निर्वचन

यथार्थं विभक्तीः सन्नमयेत। अर्थात्- विभक्तियों को अर्थ के अनुसार बदलकर निर्वचन कर लेना चाहिए।

6) शब्द में होने वाले परिवर्तन के अनुरूप

अर्थात् शब्द में होने वाले विविध परिवर्तन (वर्णागम, वर्णविपर्यय आदि) को दृष्टि में रखते हुए तदनुसार निर्वचन करना चाहिए।

7) एवमेक पदादिन निब्रूयात

अर्थात् भाषा की प्रादर्शिक विशेषताओं को दृष्टिगत करते हुए एक पद अर्थात् असमस्त पद का निर्वचन करना चाहिए।

8) समस्तपदों को तोड़कर पूर्व एवं अपरपद का निर्वचन

अतद्धित समासेष्वेक पर्वसुचानेक पर्वसुच पूर्वम्पूर्वम् अपरमपर प्रविभज्य निब्रुयात- अर्थात् तद्धित और समास से निष्पन्न वरले या एकाधिक शब्दों वाले शब्दों में पहले पहले भाग को और बाद में बाद वाले भाग को तोड़कर उनका निर्वचन करना चाहिए।

9) इक्के-दुक्के अर्थात् प्रकरण से भिन्न अकेले पद का निर्वचन नहीं करना चाहिए- नैकपादानि निब्रूयात

10) अनेकाधिक शब्दों का निर्वचन

जहाँ एक शब्द विभिन्न परिस्थितियों में अनेक अर्थों में प्रचलित हों तो समान अर्थ वाले शब्दों का समान निर्वचन प्रथा भिन्नार्थक शब्दों का भिन्न-भिन्न निर्वचन किया जाना चाहिए। **समानकर्माणि समान निर्वचनानि, नाना कर्माणि चेन्नाना निर्वचनानि।**

इस प्रकार आप सभी ने यास्क के निर्वचन सिद्धान्त के विषय में पर्याप्त अध्ययन कर लिया है। आइए अब हम अधोलिखित अभ्यास प्रश्नों के द्वारा अपने पढ़े हुए विषयों को जाँचने का प्रयास करते हैं।

अभ्यास प्रश्न-3

1) 'पाद' शब्द का क्या अर्थ है ?

(क) सोना (ख) चलना (ग) खाना (घ) पीना

2) श्लोक के चरणों को क्या कहते हैं ?

(क) पाद (ख) अर्थ (ग) शब्द (घ) इनमें से कोई नहीं

3) 'चलना' यह क्या है?

(क) क्रिया (ख) संज्ञा (ग) प्रत्यय (घ) उपसर्ग

4) 'होता' किस वेद से सम्बन्धित है ?

(क) सामवेद (ख) ऋग्वेद (ग) यजुर्वेद (घ) अथर्ववेद

5) 'होतृ' में कौन सा प्रत्यय है?

(क) कृत्य (ख) डीप् (ग) तृच्(घ) डीष्

6) स्वर कितने हैं?

(क) 3 (ख) 5 (ग) 7 (घ) 9

7) 'होतृ' में कौन सी धातु है?

(क) हो (ख) हु (ग) अदन (घ) तृन्

8) निरुक्त में सभी नाम किससे उत्पन्न कहे गये हैं?

(क) निपात (ख) उपसर्ग (ग) संज्ञा (घ) आख्यात

9) आख्यात का क्या अर्थ हैं?

(क) संज्ञा (ख) उपसर्ग (ग) निपात (घ) क्रिया

10) शब्द-अर्थ अलग-अलग होने पर किसको मुख्य समझकर निर्वचन करना चाहिए?

(क) शब्द को (ख) अर्थ को (ग) निपात को (घ) शब्दार्थ को

11) 'व्याकरण प्रक्रिया से युक्त हो तो निर्वचन कर लेना चाहिए'- यह कथन है?

(क) सत्य (ख) असत्य

12) 'स्वर-संस्कार जिन पदों में समर्थ हों, निर्वचन कर लेना चाहिए'- यह कथन है?

(क) सत्य (ख) असत्य

13) 'निर्वचन अवश्य करना चाहिए'- यह कथन है?

(क) सत्य (ख) असत्य

14) 'अक्षर-स्वर-व्यंजन की समानता को लेकर निर्वचन करना चाहिए'- यह कथन है?

(क) सत्य (ख) असत्य

15) 'अश्व' (घोड़े) के चलने में तीव्रता देखी जाती है'- यह कथन है?

(क) सत्य (ख) असत्य

1.2.3 निर्वचन पद्धति का महत्त्व

आचार्य सायण ने निरुक्त के निर्वचन की महत्ता प्रतिपादित करते हुए लिखा है कि 'अर्थाऽवबोधे निरपेक्षतया पदजातं निरुक्तम्'- अर्थात् अर्थ की जानकारी के लिये स्वतन्त्र रूप से जो पदों का संग्रह किया गया है वही निरुक्त कहलाता है। दुर्गाचार्य का मत है कि अर्थ का ज्ञान कराने के कारण यह अङ्ग दूसरे वेदाङ्गों और शास्त्रों में प्रधान है। अतः निरुक्त में शब्दों की व्याख्या अर्थात् बोध के लिए किया गया है जिससे शब्द के यथार्थ का ज्ञान होने पर वेदार्थ का बोध हो सकेगा। शब्द की इस व्याख्या पद्धति में निर्वचन शैली अत्यन्त उपादेय है। निरुक्त का यह सर्वमान्य मत है कि प्रत्येक शब्द किसी न किसी धातु से सम्बन्ध अवश्य रखता है। इसलिए निरुक्तकार शब्दों की निरुक्ति करते हुए तथा धातु के साथ विभिन्न प्रत्ययों का निर्देश करते हुए तदनुसार उसकी व्याख्या करते हैं।

शब्द की निर्वचनपूर्वक व्याख्या से शब्द के अर्थकर विकासादि भी स्पष्ट हो जाता है तथा प्रत्यक्षवृत्ति के अतिरिक्त परोक्ष एवं अतिपरोक्ष वृत्ति से भी निर्वचनपूर्वक शब्दार्थ तक पहुँचा जा सकता है।शब्द निर्वचन एवं अर्थ-निर्वचन के माध्यम से शब्द की व्याख्या समुचित रूप से की जा सकती है, क्योंकि प्रत्येक संज्ञा-पद किसी न किसी धातु से निष्पन्न होता है, भाषा का वह आधार अत्यन्त वैज्ञानिक है। इसी का आजकल नाम भाषा-विज्ञान है। इसकी उन्नति पाश्चात्त्य जगत् में 100 वर्ष के भीतर ही हुई है और वह भी संस्कृत-भाषा के यूरोप देश में प्रचार होने के बाद हुई है। परन्तु वर्तमान समय से लगभग 3000 वर्ष पूर्व वैदिक ऋषियों ने इस निर्वचन विदों के सिद्धान्तों का वैज्ञानिक रीति से निरूपण किया था। अतः किसी भी शब्द के निहितार्थ तक पहुँचने के लिए निर्वचन पद्धति एक वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत पद्धति है। अतः वेदार्थावबोध के लिए इस शैली का उपयोगअत्यधिक है। इसी लिए वेदार्थ प्रकाशन में निरुक्त का अधिक योगदान है।

1.3 सारांश

आप सभी ने इस इकाई के अन्तर्गत आचार्य यास्क द्वारा रचित निरुक्त, निर्वचन की भारतीय परम्परा, सिद्धान्त एवं महत्त्व का विशेषरूप से अध्ययन किया। आप सब यह भली-भाँति समझ गए हैं कि वेदमन्त्रों के संरक्षण एवं संवर्धन में सभी छः वेदाङ्गों में निरुक्त का अपना विशिष्ट महत्त्व है। निरुक्त के अनुसार यह स्पष्ट किया गया है कि प्रत्येक शब्द के अर्थ को ध्यान में रखते हुए निर्वचन कर लेना चाहिए। यदि शब्द में प्रकृति और प्रत्यय स्पष्ट हो तो ठीक है, यदि स्पष्ट न भी हो तो व्याकरण नियमों को बिना ध्यान में रखते हुए अर्थ को केन्द्र में रखकर निर्वचन अवश्य करना चाहिए। निरुक्त में शब्दों की जो व्युत्पत्ति या निर्वचन पद्धति बताई गई वही पद्धति आगे चलकर भाषाविज्ञान के उद्गम का मूल आधार बनी। अतः भाषा विज्ञान की दृष्टि से भी निरुक्त वेदांग का योगदान अप्रतिम है। यास्क के निर्वचन सिद्धान्त सम्बन्धित इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप सभी इससे सम्बन्धित आगे दिए गए बोध-प्रश्नों का उत्तर देने में समर्थ हो सकेंगे।

1.4 शब्दावली

1) **निरुक्ति-** शब्दों की व्युत्पत्ति।
2) **निर्वचन-** प्रकृति-प्रत्यय अथवा अर्थानुसार शब्दों की व्याख्या करना।
3) **नैरुक्ता:-** निरुक्त के अथवा निर्वचन करने वाले आचार्य।
4) **याज्ञिका:-** यज्ञ करने वाले पुरोहित आदि।
5) **निघण्टु-** वैदिक शब्दों का समूह और निघण्टु पर आधारित टीका ग्रन्थ निरुक्त।

1.5 अभ्यास प्रश्नों की उत्तरमाला

अभ्यास प्रश्न क्रम सं0 1- 1 ग, 2 ग, 3 क, 4 ख, 5 क, 6 क, 7 क, 8 क, 9 क, 10 क, 11 क, 12 ख, 13 घ, 14 घ, 15 ग, 16 क, 17 घ, 18 घ, 19 घ, 20 क।

अभ्यास प्रश्न क्रम सं0 2- 1 ग, 2 ख, 3 ख, 4 ख, 5 क, 6 क, 7 क, 8 क, 9 क, 10 क, 11 ख, 12 ग, 13 ग, 14 घ, 15 घ।

अभ्यास प्रश्न क्रम सं0 3- 1 ख, 2 क, 3 क, 4 ख, 5 ग, 6 क, 7 ख, 8 घ, 9 घ, 10 ख, 11 क, 12 क, 13 क, 14 क, 15 क।

1.6 सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. यास्क रचित निरुक्त, (1 से 7 अध्याय पर्यन्त) - प्रो0 उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, सन् 1961
2. निरुक्तम् (चतुर्दशाध्यायात्मकम्) - महामहोपाध्याय श्रीछज्जूराम शास्त्री, मेहरचन्द लछमनदास पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, सन् 2019
3. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - पद्मभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा संस्थान 37 बी0 रवीन्द्रपुरी, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी, पंचम संस्करण, 1998 ई0
4. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति का स्वरूप -डॉ0 ओमप्रकाश पाण्डेय, प्रकाशन-विश्वप्रकाशन, संस्करण 1994 ई0

1.7 बोध-प्रश्न

1. यास्क रचित निरुक्त का सामान्य परिचय पर प्रकाश डालिए।
2. निर्वचन की भारतीय परम्परा का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।
3. यास्क के निर्वचन सिद्धान्त का विश्लेषण कीजिए।
4. निर्वचन सिद्धान्त के महत्त्व पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
5. निर्वचन प्रक्रिया के किन्हीं दो बिन्दुओं पर संक्षेप में टिप्पणी लिखिए।